وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ
وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَیْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

111. और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतार देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम उन पर हर चीज़ (आँखों के सामने) गिरोह दर गिरोह जमा' कर देते वोह तब भी ईमान न लाते सिवाए उसके जो अल्लाह चाहता और उन में से अक्सर लोग जहालत से काम लेते हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا
شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِیْ
بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. और इसी तरह हमने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे के दिलमें मुलम्मा' की हुई (चिक्नी चुपड़ी) बातें (वस्वसे के तौर पर) धोका देने के लिए डालते रेहते हैं, और अगर आपका रब (उन्हें जब्रन रोकना) चाहता (तो) वोह ऐसा न कर पाते, सो आप उन्हें (भी) छोड़ दें और जो कुछ वोह बोहतान बांध रहे हैं (उसे भी)।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ
وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. और (येह) इसलिए कि उन लोगों के दिल उस (फ़रेब) की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और (येह) कि वोह उसे पसंद करने लगें और (येह भी) कि वोह (उन्हीं आ'माले बद का) इर्तिकाब करने लगें जिनके वोह ख़ुद (मुर्तकिब) हो रहे हैं।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِیْٓ
اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ
اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. (फ़रमा दीजिए) क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को हाकिम (व फ़ैसल) तलाश करूं हालांकि वोह (अल्लाह) ही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल (या'नी वाज़ेह लाइहए अ़मल पर मुश्तमिल) किताब नाज़िल फ़रमाई है, और वोह लोग जिनको हमने (पहले) किताब दी थी (दिल से) जानते हैं कि येह (कुरआन) आपके रबकी तरफ़ से (मब्नी) बर ह़क़ उतारा हुआ है पस आप (उन अह्ले किताब की निस्बत) शक करनेवालों में न हों। (कि येह लोग कुर्आन का वह़ी होना जानते हैं या नहीं)।

وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ
عَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾

115. और आपके रब की बात सच्चाई और अ़द्लकी रू से पूरी हो चुकी, उसकी बातों को कोई बदलनेवाला नहीं और वोह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَ اِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ
يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ
يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَخْرُصُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

116. और अगर तू ज़मीनमें (मौजूद) लोगों की अक्सरिय्यत का केहना मान ले तो वोह तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे। वोह (हक़्क़ो यक़ीन की बजाए) सिर्फ़ वह्मो गुमान की पैरवी करते हैं और महज़ ग़लत क़ियास आराई (और दरोग़ गोई) करते रेहते हैं।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۱۷﴾

117. बेशक आपका रब ही उसे खूब जानता है जो उसकी राह से बेहका है और वोही हिदायत याफ़्ता लोगों से (भी)ख़ूब वाक़िफ़ है।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ
كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

118. सो तुम उस (ज़बीहे़) से खाया करो जिस पर (ज़ब्ह़के वक़्त) अल्लाहका नाम लिया गया हो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखनेवाले हो।

وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ قَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا
حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ
اِلَيْهِ ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ
بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

119. और तुम्हें क्या है कि तुम उस (ज़बीहे) से नहीं खाते जिस पर (ज़ब्ह़ के वक़्त) अल्लाहका नाम लिया गया है (तुम उन ह़लाल जानवरों को बिला वजह ह़राम ठेहराते हो) हालांकि उसने तुम्हारे लिए उन (तमाम) चीज़ों को तफ़्सीलन बयान कर दिया है जो उसने तुम पर ह़राम की हैं, सिवाए उस (सूरत) के कि तुम (महज़ जान बचाने के लिए) उन (के ब क़द्रे ह़ाजत खाने) की तरफ़ इन्तिहाई मजबूर हो जाओ (सो अब तुम अपनी तरफ़से और चीज़ों को मज़ीद ह़राम न ठेहराया करो) । बेशक बहुतसे लोग बिगै़र (पुख़्ता) इल्म के अपनी ख़्वाहिशात (और मन घड़त तसव्वुरात) के ज़रीए (लोगों को) बेहकाते रेहते हैं, और यक़ीनन आपका रब ह़दसे तजावुज़ करनेवालों को ख़ूब जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ
بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

120 .और तुम ज़ाहिरी और बातिनी (या'नी आशकारो पिन्हां दोनों क़िस्म के) गुनाह छोड़ दो। बेशक जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें अ़नक़रीब सज़ा दी जाएगी उन (आ'माले बद) के बाइ़स जिनका वोह इर्तिकाब करते थे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ
عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ
لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ
إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾ ع

121. और तुम उस (जानवर के गोश्त) से न खाया करो जिस पर (ज़ब्ह़ के वक़्त) अल्लाह का नाम न लिया गया हो और बेशक वोह (गोश्त खाना) गुनाह है, और बेशक शयातीन अपने दोस्तों के दिलों में (वस्वसे) डालते रेहते हैं ताकि वोह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम उनके केहने पर चल पड़े (तो) तुम भी मुशरिक हो जाओगे।

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَ
جَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ
كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ
بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ
لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

122. भला वोह शख़्स जो मुर्दह (या'नी ईमानसे मह़रूम) था फिर हमने उसे (हिदायत की बदौलत) ज़िन्दा किया और हमने उसके लिए (ईमानो मा'रेफ़त का) नूर पैदा फ़रमा दिया (अब) वोह उसके ज़रीए (बक़िय्या) लोगों में (भी रौशनी फैलाने के लिए) चलता है उस शख़्सकी मानिन्द हो सक्ता है जिसका ह़ाल येह हो कि (वोह जहालत और गुमराही के) अँधेरों में (इस तरह घिरा) पड़ा है कि उससे निकल ही नहीं सक्ता। इसी तरह़ काफ़िरों के लिए उनके वोह आ'माल (उनकी नज़रों में) खुशनुमा दिखाए जाते हैं जो वोह अंजाम देते रहते हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ
مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا
يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

123. और इसी तरह हमने हर बस्तीमें वडेरों (और रईसों) को वहां के जराइम का सरग़ना बनाया ताकि वोह उस (बस्ती) में मक्कारियां करें, और वोह (ह़क़ीक़त में) अपनी जानों के सिवा किसी (और) से फ़रेब नहीं कर रहे और वोह (उसके अंजामे बद का) शऊ़र नहीं रखते।

وقف لازم
وقف منزل

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ
اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ
سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ
عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124. और जब उनके पास कोई निशानी आती है (तो) केहते हैं : हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि हमें भी वैसी ही (निशानी) दी जाए जैसी अल्लाह के रसूलों को दी गई है। अल्लाह खूब जानता है कि उसे अपनी रिसालत का मह़ल किसे बनाना है। अ़नक़रीब मुजरिमों को अल्लाह के हुज़ूर ज़िल्लत रसीद होगी और सख़्त अ़ज़ाब भी (मिलेगा) इस वजह से वोह मक्र (और धोका दही) करते थे।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ
صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ
يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا
حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ
كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

125. पस अल्लाह जिस किसीको (फ़ज़्लन) हिदायत देनेका इरादा फ़रमाता है उसका सीना इस्लाम के लिए कुशादा फ़रमा देता है और जिस किसी को (अ़द्लन उसकी अपनी ख़रीद कर्दह) गुमराही पर ही रखनेका इरादा फ़रमाता है उसका सीना (ऐसी) शदीद घुटन के साथ तंग कर देता है गोया वोह ब मुश्किल आस्मान (या'नी बुलंदी) पर चढ़ रहा हो। इसी तरह़ अल्लाह उन लोगों पर अ़ज़ाबे (ज़िल्लत) वाक़े' फ़रमाता है जो ईमान नहीं लाते।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

126. और येह (इस्लाम ही) आपके रबका सीधा रास्ता है बेशक हमने नसीहत क़ुबूल करनेवाले लोगों के लिए आयतें तफ़्सील से बयान कर दी हैं।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. उन्हीं के लिए उनके रबके हुज़ूर सलामती का घर है और वोही उनका मौला है उन आ'माले (सालेहा) के बाइस जो वोह अंजाम दिया करते थे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ
الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ
الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ

128. और जिस दिन वोह उन सबको जमा' फ़रमाएगा (तो इर्शाद होगा) ऐ गिरोहे जिन्नात (या'नी शयातीन!) बेशक तुमने बहुतसे इन्सानों को (गुमराह) कर लिया और इन्सानों में से उनके दोस्त कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने एक दूसरे से (खूब) फ़ाइदे ह़ासिल किए और (इसी ग़फ़्लत

الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا
بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِیْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ
خٰلِدِیْنَ فِیْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾

और मफ़ाद परस्ती के आ़लम में) हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाई थी (मगर हम उसके लिए कुछ तैयारी न कर सके)। अल्लाह फ़रमाएगा कि (अब) दोज़ख़ ही तुम्हारा ठिकाना है हमेशा उसीमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक आपका रब बड़ी हिक्मतवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّیْ بَعْضَ الظّٰلِمِیْنَ
بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع

ع ۱۵ ۸ ۲

129. इसी तरह़ हम ज़ालिमों में से बा'ज़ को बा'ज़ पर मुसल्लत करते रेहते हैं उन आ'माले (बद) के बाइ़स जो वोह कमाया करते हैं।

یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ یَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ یَقُصُّوْنَ عَلَیْكُمْ
اٰیٰتِیْ وَیُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ
هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤی اَنْفُسِنَا وَ
غَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَ شَهِدُوْا
عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۰﴾

130. ऐ गिरोहे जिन्नो इन्स! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर मेरी आयतें बयान करते थे और तुम्हारी उस दिनकी पेशी से तुम्हें डराते थे (तो) वोह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ गवाही देते हैं और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा था और वोह अपनी जानों के ख़िलाफ़ इस (बात) की गवाही देंगे कि वोह (दुनिया में) काफ़िर (या'नी ह़क़ के इन्कारी) थे।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ یَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ
الْقُرٰی بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾

131. येह (रसूलों का भेजना) इस लिए था कि आपका रब बस्तियों को ज़ुल्म के बाइ़स ऐसी ह़ालत में तबाह करनेवाला नहीं है कि वहां के रेहनेवाले (ह़क़ की ता'लीमात से बिल्कुल) बेख़बर हों (या'नी उन्हें किसी ने ह़क़ से आगाह ही न किया हो)।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا
رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

132. और हर एक के लिए उनके आ'माल के लिहाज़से दरजात (मुक़र्रर) हैं, और आपका रब उन कामों से बे ख़बर नहीं जो वोह अंजाम देते हैं।

وَرَبُّكَ الْغَنِیُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ یَّشَاْ

133. और आपका रब बेनियाज़ है, (बड़ी) रह़मतवाला

يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا
يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ؕ ﴿۱۳۳﴾

है, अगर चाहे तो तुम्हें नाबूद कर दे और तुम्हारे बाद जिसे चाहे (तुम्हारा) जा नशीन बना दे जैसा कि उसने दूसरे लोगों की अवलाद से तुमको पैदा फ़रमाया है।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

134. बेशक जिस (अ़ज़ाब) का तुमसे वा'दा किया जा रहा है वोह ज़रूर आनेवाला है और तुम (अल्लाह को) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

135. फ़रमा दीजिए : ऐ (मेरी)क़ौम! तुम अपनी जगह पर अ़मल करते रहो बेशक मैं (अपनी जगह) अ़मल किए जा रहा हूं। फिर तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि आख़िरत का अंजाम किस के लिए (बेहतर है)। बेशक ज़ालिम लोग नजात नहीं पाएंगे।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ
وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ
بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا
كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى
شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾

136. उन्होंने अल्लाह के लिए उन्हीं (चीज़ों)में से एक हि़स्सा मुक़र्रर कर लिया है जिन्हें उसने खेती और मवेशियों में से पैदा फ़रमाया है फिर अपने गुमाने (बातिल) से केहते हैं कि येह (हि़स्सा) अल्लाह के लिए है और येह हमारे (ख़ुद साख़्ता) शरीकों के लिए है फिर जो (हि़स्सा) उनके शरीकों के लिए है सो वोह तो अल्लाह तक नहीं पहुंचता और जो (हि़स्सा) अल्लाह के लिए है तो वोह उनके शरीकों तक पहुंच जाता है, (वोह) क्या ही बुरा फ़ैसला कर रहे हैं।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ
شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا
عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾

137. और इसी तरह बहुतसे मुशरिकों के लिए उनके शरीकों ने अपनी अवलाद को मार डालना (उनकी निगाह में) खुशनुमा कर दिखाया है ताकि वोह उन्हें बरबाद कर डालें और उनके (बचे खुचे) दीन को (भी) उन पर मुश्तबह कर दें, और अगर अल्लाह (उन्हें जब्रन रोकना) चाहता तो वोह ऐसा न कर पाते पस आप उन्हें और जो इफ़्तिरा पर्दाज़ी वोह कर रहे हैं (उसे नज़रअंदाज़ करते हुऐ) छोड़ दीजिए।

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ
لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَ
اَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا
يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً
عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

138. और अपने ख़याले (बातिल) से (येह भी) केहते हैं कि येह (मख़्सूस) मवेशी और खेती मम्नूअ़ है, इसे कोई नहीं खा सक्ता सिवाए उसके जिसे हम चाहें और (येह कि बा'ज़) चौपाए ऐसे हैं जिनकी पीठ (पर सवारी) को ह़राम किया गया है और (बा'ज़) मवेशी ऐसे हैं कि जिन पर (ज़ब्ह़ के वक़्त) येह लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते (येह सब) अल्लाह पर बोहतान बांधना है, अ़नक़रीब वोह उन्हें (इस बात की) सज़ा देगा जो वोह बोहतान बांधते थे।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ
خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى
اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ
فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ
اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾

139. और (येह भी) केहते हैं कि जो (बच्चा) इन चौपायों के पेट में है वोह हमारे मर्दों के लिए मख़्सूस है और हमारी औरतों पर ह़राम कर दिया गया है और अगर वोह (बच्चा) मरा हुआ (पैदा) हो तो वोह (मर्द और औरतें) सब उसमें शरीक होते हैं, अ़नक़रीब वोह उन्हें उनकी (मन घड़त) बातों की सज़ा देगा बेशक वोह बड़ी ह़िक्मतवाला ख़ूब जाननेवाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ
سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا
رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ
قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ ع

140. वाक़ई ऐसे लोग बरबाद हो गए जिन्होंने अपनी अवलाद को बिग़ैर इल्मे (सह़ीह़) के (मह़ज़) बे वक़ूफ़ी से क़त्ल कर डाला और उन (चीज़ों) को जो अल्लाहने उन्हें (रोज़ी के तौर पर) बख़्शी थीं अल्लाह पर बोह़तान बांधते हुए ह़राम कर डाला, बेशक वोह गुमराह हो गए और हिदायत याफ़्ता न हो सके।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّ
غَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ
مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا
مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ

141. और वोही है जिसने बर्दाश्तह और ग़ैर बर्दाश्तह (या'नी बेलों के ज़रीए ऊपर चढ़ाए गए और बिग़ैर ऊपर चढ़ाए गए) बाग़ात पैदा फ़रमाए और खजूर (के दरख़्त) और ज़राअ़त जिसके फल गूनागूं हैं और ज़ैतून और अनार (जो शक्लमें) एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और (ज़ाइक़े में) जुदागाना हैं (भी पैदा किए)। जब (येह दरख़्त) फल लाएं तो तुम उनके फल खाया (भी) करो और उस (खेती

يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ١٤١

और फल) के कटने के दिन उसका (अल्लाह की तरफ़से मुक़र्रर कर्दह) हक़् (भी) अदा कर दिया करो और फ़ुज़ूल ख़र्ची न किया करो बेशक वोह बेजा ख़र्च करने वालों को पसंद नहीं करता।

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ
كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ١٤٢

142. और (उसने) बार बर्दारी करनेवाले (बुलंद क़ामत) चौपाए और ज़मीन पर (ज़ब्ह् के लिए या छोटे क़द के बाइस) बिछने वाले (मवेशी पैदा फ़रमाए) तुम उस रिज़्क़ में से (भी ब तरीक़े ज़ब्ह्) खाया करो जो अल्लाह ने तुम्हें बख़्शा है और शैतान के रास्तों पर न चला करो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَ
مِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ
حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّئُوْنِيْ
بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ١٤٣

143. (अल्लाहने) आठ जोड़े पैदा किए दो (नर व मादह) भेड़से और दो (नर व मादह) बकरीसे। (आप उनसे) फ़रमा दीजिए : क्या उसने दोनों नर ह़राम किए हैं या दोनों मादह या वोह (बच्चा) जो दोनों मादाओं के रह़मों में मौजूद है? मुझे इल्मो दानिश के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ
اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ
الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ
اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَاۗءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٤٤

144. और दो (नर व मादह) ऊंट से और दो (नर व मादह) गाय से। (आप उनसे) फ़रमा दीजिए : क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादह या वोह (बच्चा) जो दोनों मादाओं के रह़मों में मौजूद है? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाहने तुम्हें इस (हुर्मत) का हुक्म दिया था? फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है ताकि लोगों को बिग़ैर जाने गुमराह करता फिरे। बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ
مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ
اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا
اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ
فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

145. आप फ़रमा दें कि मेरी तरफ़ जो वह़ी भेजी गई है उसमें तो मैं किसी (भी) खानेवाले पर (ऐसी चीज़ को) जिसे वोह खाता हो ह़राम नहीं पाता सिवाए इस के कि वोह मुर्दार हो या बेहता हुवा खून हो या सुव्वर का गोश्त हो क्योंकि येह ना पाक है या ना फ़रमानी का जानवर जिस पर ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलंद किया गया हो। फिर जो शख़्स (भूक के बाइ़स) सख़्त लाचार हो जाए न तो ना फ़रमानी कर रहा हो और न ह़दसे तजावुज़ कर रहा हो तो बेशक आपका रब बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ
ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا
حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا
اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۭ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ
بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾

146. और यहूदियों पर हमने हर नाखुनवाला (जानवर) ह़राम कर दिया था और गाय और बकरीमें से हमने उन पर दोनों की चरबी ह़राम कर दी थी सिवाए उस (चरबी) के जो दोनों की पीठ में हो या ओझड़ी में लगी हो या जो हड्डी के साथ मिली हो । येह हमने उनकी सरकशी के बाइ़स उन्हें सज़ा दी थी और यक़ीनन हम सच्चे हैं।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ
رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ
عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾

147. फिर अगर वोह आप को झुटलाएं तो फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मतवाला है और उसका अ़ज़ाब मुजरिम क़ौम से नहीं टाला जाएगा।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا
حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

148.जल्द ही मुशरिक लोग कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न (ही) हम शिर्क करते और न हमारे आबाओ अज्दाद और न किसी चीज़ को (बिला सनद) ह़राम क़रार देते । इसी तरह़ उन लोगोंने भी झुटलाया था जो उनसे पेहले थे ह़त्ता कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चख लिया। फ़रमा दीजिए : क्या तुम्हारे पास कोई (क़ाबिले हुज्जत)

بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ
فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ
شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

इ़ल्म है कि तुम उसे हमारे लिए निकाल लाओ (तो उसे पेश करो), तुम (इ़ल्मे यक़ीनी को छोड़ कर) सिर्फ़ गुमान ही की पैरवी करते हो और तुम महज़ (तख़्मीने की बुनियाद पर) दरोग़ गोई करते हो।

149.फ़रमा दीजिए कि दलीले मोह्कम तो अल्लाह ही की है, पस अगर वोह (तुम्हें मजबूर करना) चाहता तो यक़ीनन तुम सबको (पाबंदे)हिदायत फ़रमा देता। ★

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ
فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَ لَا
تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
وَ هُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ ع ۱۸ ع ۵

150. (उन मुशरिकों से) फ़रमा दीजिए कि तुम अपने उन गवाहों को पेश करो जो (आ कर) इस बात की गवाही दें कि अल्लाहने उसे हराम किया है फिर अगर वोह (झूटी) गवाही दे ही दें तो उनकी गवाही को तस्लीम न करना (बल्किउनका झूटा होना उन पर आश्कार कर देना) और न ऐसे लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी करना जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और वोह (मा'बूदाने बातिला को) अपने रबके बराबर ठेहराते हैं।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ
عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا
وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا
اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ
نَرْزُقُكُمْ وَ اِيَّاهُمْ ۚ وَ لَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا
بَطَنَ ۚ وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ

151. फ़रमा दीजिए : आओ मैं वोह चीज़ें पढ़ कर सुना दूं जो तुम्हारे रबने तुम पर ह़राम की हैं (वोह) येह कि तुम उसके साथ किसी चीज को शरीक न ठेहराओ और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और मुफ़लिसी के बाइस अपनी अवलाद को क़त्ल मत करो। हम ही तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन्हें भी (देंगे) और बे ह़याई के कामों के क़रीब न जाओ (ख़्वाह) वोह ज़ाहिर हों और (ख़्वाह) वोह पोशीदह हों और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाहने हराम किया है बजुज़ ह़क़्क़े (शरई) के येही वोह (उमूर) हैं जिनका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म

★वोह ह़क़्क़ो बातिल का फ़र्क़ और दोनों का अंजाम समझाने के बाद हर एक को आज़ादी से अपना रास्ता इख़्तियार करने का मौक़ा' देता है, ताकि हर शख़्स अपने किए का खुद ज़िम्मेदार ठेहरे और उस पर जज़ा और सज़ा का ह़क़दार क़रार पाए।

حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

दिया है ताकि तुम अ़क्ल से काम लो।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ
اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَ اِذَا
قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ
بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۙ﴿۱۵۲﴾

152. और यतीम के माल के क़रीब मत जाना मगर ऐसे तरीक़ से जो बहुत ही पसन्दीदह हो यहां तक कि वोह अपनी जवानी को पहुंच जाए, और पैमाने और तराज़ू (या'नी नाप और तोल) को इन्साफ़ के साथ पूरा किया करो। हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं देते और जब तुम (किसी की निस्बत कुछ) कहो तो अ़द्ल करो अगरचे वोह (तुम्हारा) क़राबतदार ही हो और अल्लाह के अ़हद को पूरा किया करो, येही (बातें) हैं जिनका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो।

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

153. और येह कि येही (शरीअ़त) मेरा सीधा रास्ता है सो तुम उसकी पैरवी करो और (दूसरे) रास्तों पर न चलो फिर वोह (रास्ते) तुम्हें अल्लाह की राह से जुदा कर देंगे, येही वोह बात है जिसका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى
الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ
شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ ع ۱۹ ۲

154. फिर हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता की उस शख़्स पर (ने'मत) पूरी करने के लिए जो नेकूकार बने और (उसे) हर चीज़की तफ़्सील और हिदायत और रह़मत बना कर (उतारा) ताकि वोह (लोग क़ियामत के दिन) अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान लाएं।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ
وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۙ﴿۱۵۵﴾

155. और येह (क़ुरआन) बरकतवाली किताब है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है सो (अब) तुम इसकी पैरवी किया करो और (अल्लाह से) डरते रहो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ

156. (क़ुरआन इस लिए नाज़िल किया है) कि तुम

عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَ اِنْ
كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾

कहीं येह (न) कहो कि बस (आस्मानी) किताब तो हमने पहले सिर्फ़ दो गिरोहों (यहूदो नसारा) पर उतारी गई थी और बेशक हम उनके पढ़ने पढ़ाने से बे ख़बर थे।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا
الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ
جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى
الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157. या येह (न) कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम यक़ीनन उनसे ज़ियादा हिदायत याफ़्ता होते सो अब तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास वाज़ेह़ दलील और हिदायत और रह़मत आ चुकी है, फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उनसे कतराए। हम अ़नक़रीब उन लोगों को जो हमारी आयतों से गुरेज़ करते हैं बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे इस वजह से कि वोह (आयाते रब्बानी से) ए'राज़ करते थे।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ
اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ
انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158. वोह फ़क़त इसी इन्तिज़ार में हैं कि उनके पास (अ़ज़ाब के) फ़रिश्ते आ पहुंचें या आपका रब (ख़ुद) आ जाए या आपके रब की कुछ (मख़्सूस) निशानियां (अ़यानन) आ जाएं। (उन्हें बता दीजिए कि) जिस दिन आपके रब की बा'ज़ निशानियां (यूं ज़ाहिरन) आ पहुंचेंगी (तो उस वक़्त) किसी (ऐसे) शख़्स का ईमान उसे फ़ाइदा नहीं पहुंचाएगा जो पहले से ईमान नहीं लाया था या उसने अपने ईमान (की ह़ालत) में कोई नेकी नहीं कमाई थी, फ़रमा दीजिए : तुम इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ كَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ؕ
اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

159. बेशक जिन लोगों ने (जुदा जुदा राहें निकाल कर) अपने दीन को पारह पारह कर दिया और वोह (मुख़्तलिफ़) फ़िरक़ों में बट गए, आप किसी चीज़में उनके (तअ़ल्लुक़दार और ज़िम्मेदार) नहीं हैं, बस उनका मुआ़मला अल्लाह ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें उन कामों से आगाह फ़रमा देगा जो वोह किया करते थे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ
اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

160. जो कोई एक नेकी लाएगा तो उसके लिए (बतौरे अज्र) उस जैसी दस नेकियां हैं और जो कोई एक गुनाह लाएगा तो उसको उस जैसे एक (गुनाह) के सिवा सज़ा नहीं दी जाएगी और वोह ज़ुल्म नहीं किए जाएंगे।

قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۱﴾

161. फ़रमा दीजिए : बेशक मुझे मेरे रबने सीधे रास्ते की हिदायत फ़रमा दी है (येह) मज़बूत दीन (की राह है और येही) अल्लाह की तरफ़ यक्सू और हर बातिल से जुदा इब्राहीम (عليه السلام) की मिल्लत है और वोह मुशरिकों में से न थे।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ
وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۲﴾

162. फ़रमा दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़ और मेरा हज और क़ुर्बानी (समेत सब बंदगी) और मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।

لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ
وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾

163. उसका कोई शरीक नहीं और उसीका मुझे हुक्म दिया गया है और में (जमीअ़ मख़्लूक़ात में) सबसे पहला मुसलमान हूं।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ
كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا
عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ
ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾

164. फ़रमा दीजिए : क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई दूसरा रब तलाश करूं हालांकि वोही हर शय का परवरदिगार है, और हर शख़्स जो भी (गुनाह) करता है (उस का वबाल) उसी पर होता है और कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ लौटना है फिर वोह तुम्हें उन (बातों की हक़ीक़त) से आगाह फ़रमा देगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ
الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ
بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ

165. और वोही है जिसने तुमको ज़मीनमें नाइब बनाया और तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ पर दरजात में बुलंद किया ताकि वोह उन (चीज़ों) में तुम्हें आज़माए जो उसने तुम्हें (अमानतन) अ़ता कर रखी हैं । बेशक आपका रब (अ़ज़ाब के हक़दारों को) जल्द सज़ा देनेवाला है और

اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ
وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

बेशक वोह (मग़्फ़िरत के उम्मीदवारों को) बड़ा बख़्शनेवाला और बे हृद रहृम फ़रमानेवाला है।

النصف ع ٢٠

आयातुहा 206	7 सूरतुल आ'राफ़ि मक्किय्यतुन 39	रुकूआतुहा 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहृम फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ ج

1. अलिफ़ लाम मीम साद (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल (ﷺ) ही बेहतर जानते हैं)।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ
صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ
وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) येह किताब है(जो) आपकी तरफ़ उतारी गई है सो आपके सीनए (अनवर) में इस (की तब्लीग़ पर कुफ़्फ़ार के इन्कारो तक्ज़ीब के ख़याल)से कोई तंगी न हो (येह तो उतारी ही इस लिए गई है)कि आप इसके ज़रीए (मुन्किरीन को) डर सुना सकें और येह मो'मिनीन के लिए नसीह़त (है)।

اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ لَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

3. (ऐ लोगो!) तुम इस (क़ुरआन)की पैरवी करो जो तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया है और उसके गैरों में से (बातिल ह़ाकिमों और) दोस्तों के पीछे मत चलो, तुम बहुत ही कम नसीह़त क़ुबूल करते हो।

وَ كَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا
بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

4. और कितनी ही बस्तियां (ऐसी) हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला सो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आया या (जबकि) वोह दोपहर को सो रहे थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ
اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

5. फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आ गया तो उनकी पुकार सिवाए इसके (कुछ) न थी कि वोह केहने लगे कि बेशक हम ज़ालिम थे।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ
وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ لا

6. फिर हम लोगों से ज़रूर पुर्सिश करेंगे जिनकी तरफ़ रसूल भेजे गए और हम यक़ीनन रसूलों से भी (उनकी दा'वतो तब्लीग़ के रद्दे अ़मल की निस्बत) दरयाफ़्त करेंगे।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّ مَا كُنَّا
غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾

7. फ़िर हम उन पर (अपने) इल्म से (उनके सब) हा़लात बयान करेंगे और हम (कहीं) ग़ाइब न थे (कि उन्हें देखते न हों)।

وَ الْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾

8. और उस दिन (आ'माल का) तोला जाना ह़क़ है सो जिनके (नेकियों के) पलड़े भारी होंगे तो वोही लोग कामयाब होंगे।

وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾

9. और जिनके (नेकियों के) पलड़े हलके होंगे तो येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुक़्सान पहुंचाया, इस वजह से कि वोह हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते थे।

وَ لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ ع

10. और बेशक हमने तुमको ज़मीनमें तमक्कुनो तसर्रुफ़ अ़ता किया और हमने उसमें तुम्हारे लिए अस्बाबे मई़शत पैदा किए, तुम बहुत ही कम शुक्र बजा लाते हो।

ع ٨

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ
قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ
مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

11. और बेशक हमने तुम्हें (या'नी तुम्हारी अस्ल को) पैदा किया फिर तुम्हारी सूरतगरी की (या'नी तुम्हारी ज़िन्दगी की कीमियाई और ह़यातियाती इब्तिदाओ इर्तिक़ा के मराहि़ल को आदम (عليه السلام) के वजूद की तश्कील तक मुकम्मल किया) फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम (عليه السلام) को सजदह करो तो सबने सजदह किया सिवाए इब्लीस के। वोह सजदह करनेवालों में से न हुवा।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ
اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ
خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ
طِيْنٍ ﴿١٢﴾

12. इर्शाद हुवा : (ऐ इब्लीस!) तुझे किस(बात)ने रोका था कि तूने सजदह न किया जबकि मैं ने तुझे हुक्म दिया था, उसने कहा : मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आगसे पैदा किया है और उसको तूने मिट्टी से बनाया है।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

13. इर्शाद हुवा : पस तू यहां से उतर जा! तुझे कोई ह़क़ नहीं

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ
الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾

पहुंचता कि तू यहां तकब्बुर करे पस (मेरी बारगाह से) निकल जा बेशक तू ज़लीलो ख़्वार लोगों में से है।

قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾

14. उसने कहा : मुझे उस दिन तक(ज़िन्दगी की) मोह्लत दे जिस दिन लोग (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾

15. इर्शाद हुवा : बेशक तू मोहलत दिए जानेवालों में से है।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ
لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾

16. उस(इब्लीस)ने कहा : पस इस वजह से कि तूने मुझे गुमराह किया है (मुझे क़सम है कि) मैं (भी) उन (अफ़रादे बनी आदम को गुमराह करने) के लिए तेरी सीधी राह पर ज़रूर बैठूंगा (ताआंकि उन्हें राहे हक़् से हटा दूं)।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ
مِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ
شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर मैं यक़ीनन उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से उनके पास आऊंगा, और (नतीजतन) तू उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ
لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

18. इर्शादे बारी हुवा (ऐ इब्लीस!) तू यहां से ज़लीलो मरदूद हो कर निकल जा, उनमें से जो कोई तेरी पैरवी करेगा तो में ज़रूर तुम सबसे दोज़ख़ भर दूंगा।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ
الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا
تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

19. और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी ज़ौजा (दोनों) जन्नत में सुकूनत इख़्तियार करो सो जहां से तुम दोनों चाहो खाया करो और (बस) उस दरख़्त के क़रीब मत जाना वरना तुम दोनों हृद से तजावुज़ करने वालों में से हो जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ

20. फिर शैतानने दोनों के दिल में वस्वसा डाला ताकि

لَهُمَا مَاوٗرِیَ عَنۡهُمَا مِنۡ سَوۡاٰتِهِمَا
وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنۡ هٰذِهِ
الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنۡ تَكُوۡنَا مَلَكَيۡنِ اَوۡ
تَكُوۡنَا مِنَ الۡخٰلِدِيۡنَ ﴿۲۰﴾

उनकी शर्मगाहें जो उन(की नज़रों) से पोशीदह थीं उन पर ज़ाहिर कर दे और केहने लगा : (ऐ आदमो ह़व्वा!) तुम्हारे रबने तुम्हें उस दरख़्त (का फल खाने) से नहीं रोका मगर (सिर्फ़ इस लिए कि उसे खाने से) तुम दोनों फ़रिश्ते बन जाओगे (या'नी अ़लाइके बशरी से पाक हो जाओगे) या तुम दोनों (उसमें) हमेशा रेहनेवाले बन जाओगे (या'नी इस मुक़ामे क़ुर्ब से कभी मह़रूम नहीं किए जाओगे)।

وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّىۡ لَكُمَا لَمِنَ
النّٰصِحِيۡنَ ۙ﴿۲۱﴾

21. और उन दोनों से क़सम खा कर कहा कि बेशक मैं तुम्हारे ख़ैर ख़्वाहों में से हूं।

فَدَلّٰٮهُمَا بِغُرُوۡرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا
الشَّجَرَةَ بَدَتۡ لَهُمَا سَوۡاٰتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخۡصِفٰنِ عَلَيۡهِمَا مِنۡ وَّرَقِ الۡجَـنَّةِ ؕ
وَنَادٰٮهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمۡ اَنۡهَكُمَا عَنۡ
تِلۡكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ
الشَّيۡطٰنَ لَـكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۲﴾

22. पस वोह फ़रेब के ज़रीए़ दोनों को(दरख़्त का फल खाने तक)उतार लाया, सो जब दोनों ने दरख़्त (के फल) को चख लिया तो दोनों की शर्मगाहें उनके लिए ज़ाहिर हो गईं और दोनों अपने (बदन के) ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे तो उनके रबने उन्हें निदा फ़रमाई कि क्या मैने तुम दोनों को उस दरख़्त(के क़रीब जाने)से रोका न था और तुमसे येह (न) फ़रमाया था कि बेशक शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا ٚ وَاِنۡ
لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ
الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۲۳﴾

23. दोनों ने अ़र्ज़ किया : ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ियादती की। और अगर तूने हमको न बख़्शा और हम पर रह़म (न)फ़रमाया तो हम यक़ीनन नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।

قَالَ اهۡبِطُوۡا بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ
عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّ
مَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۲۴﴾

24. इर्शादे बारी हुवा तुम (सब) नीचे उतर जाओ तुम में से बा'ज़ बा'ज़ के दुश्मन हैं और तुम्हारे लिए ज़मीनमें मुअ़य्यन मुद्दत तक जाए सुकूनत और मताए़ ह़यात (मुक़र्रर कर दिए गए हैं गोया तुम्हें ज़मीनमें क़ियामो मआ़श के दो बुनियादी ह़क़ दे कर उतारा जा रहा है, उस पर अपना निज़ामे ज़िन्दगी उस्तुवार करना)।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ
وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع

ع ٢ ١٥ ٩

25. इर्शाद फ़रमाया : तुम उसी (ज़मीन) में ज़िन्दगी गुज़ारोगे और उसी में मरोगे और (क़ियामत के रोज़) उसी में से निकाले जाओगे।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَ
لِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ
مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. ऐ अवलादे आदम! बेशक हमने तुम्हारे लिए (ऐसा) लिबास उतारा है जो तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और (तुम्हें) ज़ीनत बख़्शे और (उस ज़ाहिरी लिबास के साथ एक बातिनी लिबास भी उतारा है और वोही) तक़्वा का लिबास ही बेहतर है। येह (ज़ाहिरो बातिन के लिबास सब) अल्लाह की निशानियां हैं ताकि वोह नसीहत क़ुबूल करें।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ
يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا
سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَ
قَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا
جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. ऐ अवलादे आदम! (कहीं) तुम्हें शैतान फ़ित्ने में न डाल दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बापको जन्नत से निकाल दिया, उनसे उनका लिबास उतरवा दिया ताकि उन्हें उनकी शर्मगाहें दिखा दे। बेशक वोह (ख़ुद) और उसका क़बीला तुम्हें (ऐसी ऐसी जगहों से) देखता (रेहता) है जहां से तुम उन्हें नहीं देख सकते। बेशक हमने शैतानों को ऐसे लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا
عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ
اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. और जब वोह कोई बे ह़याई का काम करते हैं (तो) केहते हैं, हमने अपने बापदादा को इसी (तरीक़े) पर पाया और अल्लाहने हमें इसीका हुक्म दिया है। फ़रमा दीजिए कि अल्लाह बे ह़याई के कामों का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह (की ज़ात) पर ऐसी बातें करते हो जो तुम ख़ुद (भी) नहीं जानते।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ قف وَاَقِيْمُوْا
وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۬

29. फ़रमा दीजिए : मेरे रबने इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और तुम हर सजदे के वक़्तो मुकाम पर अपने रुख़ (का'बे की तरफ़) सीधे कर लिया करो और तमाम तर फ़रमांबरदारी उसके लिए ख़ालिस करते हुए उसकी

كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ؕ ﴿٢٩﴾
فَرِيْقًا هَدٰى وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ
الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا
تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ ع ٣ ١٠
قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ
لِعِبَادِهٖ وَ الطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ
هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾
قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ وَ الْاِثْمَ وَ
الْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ اَنْ تُشْرِكُوْا
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ
تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

इ़बादत किया करो। जिस तरह उसने तुम्हारी (ख़िल्क़ो ह़यातकी) इब्तिदा की तुम उसी तरह (उसकी तरफ़) पलटोगे।

30. एक गिरोह को उसने हिदायत फ़रमाई और एक गिरोह पर (उसके अपने कस्बो अमल के नतीजे में) गुमराही साबित हो गई। बेशक उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया था और वोह येह गुमान करते हैं कि वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

31. ऐ अवलादे आदम! तुम हर नमाज़के वक़्त अपना लिबासे ज़ीनत (पहन) लिया करो और खाओ और पियो और ह़दसे ज़ियादा खर्च न करो कि बेशक वोह बेजा खर्च करने वालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

32. फ़रमा दीजिए : अल्लाह की उस ज़ीनत (व आराईश)को किसने ह़राम किया है जो उसने अपने बंदों के लिए पैदा फ़रमाई है और खाने की पाक सुथरी चीज़ों को (भी किसने ह़राम किया है?) फ़रमा दीजिए : येह (सब ने'मतें जो) अह्ले ईमान की दुनिया की ज़िन्दगी में (बिल उ़मूम रवा) हैं क़ियामत के दिन बिल ख़ुसूस (उन ही के लिए) होंगी। इस तरह़ हम जाननेवालों के लिए आयतें तफ़्सील से बयान करते हैं।

33. फ़रमा दीजिए : कि मेरे रबने (तो) सिर्फ़ बे ह़याई की बातों को ह़राम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों और जो पोशीदह हों (सबको) और गुनाह को और नाह़क़ ज़ियादती को और उस बात को कि तुम अल्लाहका शरीक ठेहराओ जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और (मज़ीद) येह कि तुम अल्लाह (की ज़ात) पर ऐसी बातें कहो जो तुम ख़ुद भी नहीं जानते।

34. और हर गिरोह के लिए एक मीआ़द (मुक़र्रर) है

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ
لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

फिर जब उनका (मुक़र्ररह) वक़्त आ जाता है तो वोह एक घड़ी (भी) पीछे नहीं हट सक्ते और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ
مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ
اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. ऐ अवलादे आदम! अगर तुम्हारे पास तुम में से रसूल आएं जो तुम पर मेरी आयतें बयान करें पस जो परहेज़गार बन गया और उसने (अपनी) इस्लाह कर ली तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न (ही) वोह रंजीदह होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا
عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन (पर ईमान लाने) से सरकशी की, वोही अहले जहन्नम हैं वोह उसमें हमेशा रेहने वाले हैं।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰٓئِكَ
يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا
ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. फिर उस शख़्स से ज़ियादा ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या उसकी आयतों को झुटलाए? उन लोगों को उनका (वोह) हिस्सा पहुंच जाएगा (जो) नविश्तए किताब है यहां तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) आएंगे कि उनकी रूहें क़ब्ज़ कर लें (तो उनसे) कहेंगे : अब वोह (झूटे मा'बूद) कहां हैं जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इ़बादत करते थे? वोह (जवाबन) कहेंगे कि वोह हमसे गुम हो गए (या'नी अब कहां नज़र आते हैं) और वोह अपनी जानों के ख़िलाफ़ (ख़ुद येह) गवाही देंगे कि बेशक वोह काफ़िर थे।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي
النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ

38. अल्लाह फ़रमाएगा : तुम जिन्नों और इन्सानों की उन (जहन्नमी) जमाअ़तों में शामिल हो कर जो तुम से पहले गुज़र चुकी हैं दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ! जब भी कोई जमाअ़त (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी वोह अपने जैसी

أُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓى إِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا
جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ أُخْرٰىهُمْ لِأُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ أَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا
مِّنَ النَّارِ ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّ
لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

दूसरी जमाअ़त पर ला'नत भेजेगी, यहां तक कि जब उसमें सारे (गिरोह) जमा' हो जाएंगे तो उनकेपिछले अपने अगलों के ह़क़् में कहेंगे कि ऐ हमारे रब! उन्हीं लोगोंने हमें गुमराह किया था सो उनको दोज़ख़ का दो गुना अ़ज़ाब दे। इर्शाद होगा : हर एक के लिए दो गुना है मगर तुम जानते नहीं हो।

وَقَالَتْ أُوْلٰىهُمْ لِأُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع

39. और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे : सो तुम्हें हम पर कुछ फ़ज़ीलत न हुई पस (अब) तुम (भी) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो उसके सबब जो कुछ तुम कमाते थे।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ
أَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. बेशक जिन लोगोंने हमारी आयतों को झुटलाया और उनसे सरकशी की उनके लिए आस्माने (रह्मतो कुबूलिय्यत) के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे और न ही वोह जन्नत में दाख़िल हो सकेंगे यहां तक कि सूई के सूराख़ में ऊंट दाख़िल हो जाए (या'नी जैसे येह नामुमकिन है उसी तरह़ उनका जन्नतमें दाख़िल होना भी नामुमकिन है), और हम मुजरिमों को इसी तरह़ सज़ा देते हैं।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

41. और उनके लिए (आतिशे) दोज़ख़का बिछोना और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ज़ालिमों को इसी तरह़ सज़ा देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَآ ۡ أُولٰٓئِكَ
أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़ियादा मुकल्लफ़ नहीं करते, येही लोग अहले जन्नत हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ

43. और हम वोह (रंजिशो) कीना जो उनके सीनों में

غِلٍّ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَ
قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰىنَا
لِهٰذَا ۗ وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْ لَاۤ
اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ نُوْدُوْۤا
اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ الثلثة

(दुनिया के अंदर एक दूसरे के लिए) था निकाल (के दूर कर) देंगे उनके (महलों के) नीचे नेहरें जारी होंगी और वोह कहेंगे सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने हमें यहां तक पहुंचा दिया, और हम (इस मुक़ाम तक कभी राह न पा सक्ते थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न फ़रमाता बेशक हमारे रबके रसूल हक़्क़ (का पैग़ाम) लाए थे, और (उस दिन) निदा दी जाएगी कि तुम लोग इस जन्नत के वारिस बना दिए गए हो उन (नेक) आ'माल के बाइस जो तुम अंजाम देते थे।

وَ نَادٰۤی اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ
النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا
حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ
حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَیْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَی
الظّٰلِمِیْنَ ۙ﴿۴۴﴾

44. और अहले जन्नत दोज़ख़वालों को पुकार कर कहेंगे : हमने तो वाक़िअतन उसे सच्चा पा लिया जो वा'दा हमारे रबने हमसे फ़रमाया था, सो क्या तुमने (भी) उसे सच्चा पाया जो वा'दा तुम्हारे रबने (तुमसे) किया था? वोह कहेंगे हां । फिर उनके दरमियान एक आवाज़ देनेवाला आवाज़ देगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की ला'नत है।

الَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ
وَ یَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ
كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وقف لازم

45. (येह वोही हैं) जो (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोकते थे और उसमें कजी तलाश करते थे और वोह आख़िरत का इन्कार करनेवाले थे।

وَ بَیْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَ عَلَی الْاَعْرَافِ
رِجَالٌ یَّعْرِفُوْنَ كُلًّۢا بِسِیْمٰهُمْ ۚ وَ
نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ
عَلَیْكُمْ ۫ لَمْ یَدْخُلُوْهَا وَ هُمْ
یَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾

46. और (उन) दोनों (या'नी जन्नतियों और दोज़ख़ियों) के दरमियान एक हिजाब (या'नी फ़सील) है और आ'राफ़ (या'नी उसी फ़सील) पर कुछ मर्द होंगे जो सब को उनकी निशानियों से पेहचान लेंगे। और वोह अहले जन्नत को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वोह (अहले आ'राफ़ खुद अभी) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे हालांकि वोह (उसके) उम्मीदवार होंगे।

وَ اِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ
اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا
تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. और जब उनकी निगाहें दोज़ख़वालों की तरफ़ फेरी जाएंगी तो वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम गिरोह के साथ (जमा') न कर।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا
يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ
اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَ مَا كُنْتُمْ
تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और अहले आ'राफ़ (उन दोज़ख़ी) मर्दों को पुकारेंगे जिन्हें वोह उनकी निशानियों से पेहचान रहे होंगे (उनसे) कहेंगे : तुम्हारी जमाअ़तें तुम्हारे काम न आ सकीं और न (वोह) तकब्बुर (तुम्हें बचा सका)जो तुम किया करते थे।

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ
اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا
خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. क्या येही वोह लोग हैं (जिनकी ख़स्ता ह़ालत देख कर) तुम कस्मे खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी रह़्मत से (कभी) नहीं नवाज़ेगा? (सुन लो! अब उन्हीं को कहा जा रहा है) तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ न तुम पर कोई ख़ौफ़ होगा और न तुम ग़मगीन होगे।

وَ نَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ
الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ
الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ ۙ

50. और दोज़ख़वाले अहले जन्नत को पुकार कर कहेंगे कि हमें (जन्नती) पानी से कुछ फ़ैज़याब कर दो या उस (रिज़्क़) में से जो अल्लाहने तुम्हें बख़्शा है। वोह कहेंगे : बेशक अल्लाहने येह दोनों (ने'मतें) काफ़िरों पर ह़राम कर दी हैं।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ
نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ
وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾

51. जिन्होंने अपने दीनको तमाशा और खेल बना लिया और जिन्हें दुन्यवी ज़िन्दगीने फ़रेब दे रखा था, आज हम उन्हें उसी तरह भुला देंगे जैसे वोह (हमसे) अपने इस दिनकी मुलाक़ात को भूले हुए थे और जैसे वोह हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى

52. और बेशक हम उनके पास ऐसी किताब (क़ुर्आन)

عِلْمٍ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾

लाए जिसे हमने (अपने) इ़ल्म (की बिना) पर मुफ़स्सल (या'नी वाज़ेह़) किया, वोह ईमानवालों के लिए हिदायत और रह़मत है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ
يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ
مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا
بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ
فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ
الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ع ٦ ١٣

53. वोह सिर्फ़ उस (कही हुई बात) के अंजाम के मुन्तज़िर हैं, जिस दिन उस (बात) का अंजाम सामने आ जाएगा वोह लोग जो उससे क़ब्ल उसे भुला चुके थे कहेंगे : बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ (बात) ले कर आए थे, सो क्या (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं जो हमारे लिए सिफ़ारिश कर दें या हम (फिर दुनियामें) लौटा दिए जाएं ताकि हम (इस मर्तबा) उन (आ'माल) से मुख़्तलिफ़ अ़मल करें जो (पहले) करते रहे थे। बेशक उन्होंने अपने आपको नुक़्सान पहुंचाया और वोह (बोहतानो इफ़्तिराअ) उनसे जाता रहा जो वोह गढ़ा करते थे।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ
بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ ؕ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾

54. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की काइनात) को छे मुद्दतों (या'नी छे अद्वार) में पैदा फ़रमाया फिर (अपनी शान के मुताबिक़) अ़र्श पर इस्तिवा (या'नी उस काइनात में अपने हुक्मो इक़्तिदार के निज़ाम का इज्रा) फ़रमाया। वोही रातसे दिन को ढांक देता है (दर आं ह़ालीकि दिन रात में से) हर एक दूसरे के तआक़ुब में तेज़ीसे लगा रेहता है और सूरज और चांद और सितारे (सब) उसीके हुक्म (से एक निज़ाम)के पाबंद बना दिये गए हैं। ख़बरदार!(हर चीज़की) तख़्लीक़ और हुक्मो तदबीर का निज़ाम चलाना उसीका काम है। अल्लाह बड़ी बरकतवाला है जो तमाम जहानों की (तदरीजन) परवरिश फ़रमानेवाला है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ ج

55. तुम अपने रबसे गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता (दोनों तरीक़ों से) दुआ़ किया करो, बेशक वोह ह़दसे बढ़नेवालों को पसंद नहीं करता।

وَ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ
اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ
اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

56. और ज़मीनमें उसके संवर जाने (या'नी मुल्क का माहौले हयात दुरस्त हो जाने) के बाद फ़साद अंगेज़ी न करो और (उसके अज़ाबसे) डरते हुए और (उसकी रह्मत की) उम्मीद रखते हुए उससे दुआ़ करते रहा करो, बेशक अल्लाह की रह्मत एहसान शिआ़र लोगों (या'नी नेकूकारों) के क़रीब होती है।

وَ هُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ
اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ
مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا
بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ
نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. और वोही है जो अपनी रह्मत (या'नी बारिश) से पहले हवाओं को खुशख़बरी बना कर भेजता है, यहां तक कि जब वोह (हवाएं) भारी भारी बादलों को उठा लाती हैं तो हम उन (बादलों) को किसी मुर्दा (या'नी बे आबो गियाह) शहर की तरफ़ हांक देते हैं फिर हम उस (बादल) से पानी बरसाते हैं फिर हम उस (पानी) के ज़रीए (ज़मीनसे) हर क़िस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह् हम (रोज़े क़ियामत) मुर्दों को (क़ब्रों से) निकालेंगे ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ
رَبِّهٖ ۚ وَ الَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ
اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾ ع ٧ ١٤

58. और जो अच्छी (या'नी ज़रख़ेज़) ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से (ख़ूब) निकलता है और जो (ज़मीन) ख़राब है (उससे) थोड़ीसी बे फ़ाइदा चीज़ के सिवा कुछ नहीं निकलता। इसी तरह् हम (अपनी) आयतें (या'नी दलाइल और निशानियां) उन लोगों के लिए बार बार बयान करते हैं जो शुक्र गुजार हैं।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ
فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾

59. बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा सो उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम(के लोगो!) तुम अल्लाह की इ़बादत किया करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, यक़ीनन मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ आता है।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ

60. उनकी क़ौमके सरदारों और रईसोंने कहा : (ऐ नूह!)

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में (मुब्तिला) देखते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

61. उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! मुझमें कोई गुमराही नहीं लेकिन (येह हक़ीक़त है कि) मैं तमाम जहानों के रबकी तरफ़से रसूल (मबऊस हुवा) हूं।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ
وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. मैं तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हें नसीहत कर रहा हूं और अल्लाहकी तरफ़ से वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ
وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. क्या तुम्हें इस बात पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्हीं में से एक मर्द (की ज़बान) पर नसीहत आई ताकि वोह तुम्हें (अज़ाबे इलाही से) डराए और तुम परहेज़गार बन जाओ और येह इसलिए है कि तुम पर रहम किया जाए।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي
الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع

ع ٨ ١٥

64. फिर उन लोगोंने उन्हें झुटलाया सो हमने उन्हें और उन लोगों को जो कश्तीमें उनकी मइय्यत में थे नजात दी और हमने उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था, बेशक वोह अंधे (या'नी बे बसीरत) लोग थे।

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. और हमने (क़ौमे) आद की तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई हूद (عليه السلام) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत किया करो उसके सिवा कोई तुम्हारा मा'बूद नहीं, क्या तुम परहेज़गार नहीं बनते?।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّ
اِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो कुफ़्र (या'नी दा'वते हक़्क़की मुख़ालिफ़तो मुज़ाहिमत) कर रहे थे कहा : (ऐ हूद!) बेशक हम तुम्हें हिमाक़त (में मुब्तिला) देखते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटे लोगों में गुमान करते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّ
لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. उन्हों ने कहा : ऐ मेरी कौम! मुझमें कोई ह़िमाक़त नहीं लेकिन (येह ह़क़ीक़त है कि)मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़से रसूल (मबऊ़स हुवा) हूं।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنَا لَكُمْ
نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

68. मैं तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और मैं तुम्हारा अमानतदार ख़ैरख़्वाह हूं।

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ
لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَ اذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ
خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ
فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ
اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. क्या तुम्हें इस बात पर तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्ही में से एक मर्द (की ज़बान) पर नसीह़त आई ताकि वोह तुम्हें (अ़ज़ाबे इलाही से) डराए, और याद करो जब उसने तुम्हें क़ौमे नूह़ के बाद (ज़मीन पर) जा नशीन बनाया और तुम्हारी ख़िलक़त में (क़द्दो क़ामत और) क़ुव्वत को मज़ीद बढ़ा दिया, सो तुम अल्लाहकी ने'मतों को याद करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ
وَ نَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ
فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. वोह केहने लगे : क्या तुम हमारे पास (इस लिए) आए हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाहकी इ़बादत करें और उन (सब ख़ुदाओं) को छोड़ दें जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा किया करते थे? सो तुम हमारे पास वोह (अ़ज़ाब) ले आओ जिसकी तुम हमें वई़द सुनाते हो अगर तुम सच्चे लोगों में से हो।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ
فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ
سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ
مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

71. उन्होंने कहा : यक़ीनन तुम पर तुम्हारे रबकी तरफ़से अ़ज़ाब और ग़ज़ब वाजिब हो गया। क्या तुम मुझसे उन (बुतों के) नामों के बारे में झगड़ रहे हो जो तुमने और तुम्हारे बापदादाने (ख़ुद ही फ़रज़ी तौर पर) रख लिए हैं जिनकी अल्लाहने कोई सनद नहीं उतारी? सो तुम (अ़ज़ाब का) इन्तिज़ार करो मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ
مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾

ع ٩ ٨ ١٦

72. फिर हमने उनको और जो लोग उनके साथ थे अपनी रह्मत के बाइस नजात बख़्शी और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था और वोह ईमान लानेवाले न थे।

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ
اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ
وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

وقف لازم

73. और (क़ौमे) समूद की तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई सालेह़ (عليه السلام) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! अल्लाहकी इबादत किया करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से एक रौशन दलील आ गई है। येह अल्लाहकी ऊंटनी तुम्हारे लिए निशानी है, सो तुम उसे (आज़ाद) छोड़े रखना कि अल्लाह की ज़मीनमें चरती रहे और उसे बुराई (के इरादे)से हाथ न लगाना वरना तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ पकड़ेगा।

وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ
بَعْدِ عَادٍ وَّ بَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ
تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّ
تَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا
اٰلَآءَ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

74. और याद करो! जब उसने तुम्हें (क़ौमे)आ़द के बाद (ज़मीनमें) जा नशीन बनाया और तुम्हें ज़मीनमें सुकूनत बख़्शी कि तुम उसके नर्म (मेदानी) इलाक़ों में मह़ल्लात बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर(उनमें) घर बनाते हो, सो तुम अल्लाहकी (उन) ने'मतों को याद करो और ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी न करते फिरो।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ
اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا
مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ

75. उनकी क़ौम के उन सरदारों और रईसोंने जो मुतकब्बिरो सरकश थे उन ग़रीब पिसे हुए लोगों से कहा जो उनमें से ईमान ले आए थे : क्या तुम्हें यक़ीन है कि वाक़ई सालेह़ (عليه السلام) अपने रब की तरफ़से (रसूल बना कर) भेजे गए हैं? उन्होंने कहा : जो कुछ उन्हें दे कर भेजा

أُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

गया है बेशक हम उस पर ईमान रखने वाले हैं।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. मुतकब्बिर लोग केहने लगे : बेशक जिस (चीज़) पर तुम ईमान लाए हो हम उसके सख़्त मुन्किर हैं।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا عَنْ اَمْرِ
رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. पस उन्होंने ऊंटनी को (काट कर) मार डाला और अपने रबके हुक्म से सरकशी की और केहने लगे : ऐ सालेह! तुम वोह (अ़ज़ाब) हमारे पास ले आओ जिसकी तुम हमें वईद सुनाते थे अगर तुम(वाक़ई)रसूलों में से हो।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. सो उन्हें सख़्त ज़ल्ज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकड़ा पस वोह (हलाक हो कर) सुब्ह् अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ
وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

79. फिर (सालेह عليه السلام ने)उनसे मुंह फेर लिया और कहा : ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रबका पैग़ाम पहुंचा दिया था और नसीहत (भी) कर दी थी लेकिन तुम नसीहत करनेवालों को पसंद (ही) नहीं करते।

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. और लूत (عليه السلام) को (भी हमने इसी तरह भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : क्या तुम (ऐसी) बे ह़याई का इर्तिकाब करते हो जिसे तुमसे पहले अह्ले जहां में से किसीने नहीं किया था ?

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً
مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

81. बेशक तुम नफ़्सानी ख़्वाहिश के लिए औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास आते हो बल्कि तुम ह़दसे गुज़र जानेवाले हो।

وَ مَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ
اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. और उनकी क़ौमका सिवाए उसके कोई जवाब न था कि वोह केहने लगे : उनको बस्तीसे निकाल दो बेशक येह लोग बड़े पाकीज़गी के तलबगार हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ
كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. पस हमने उनको (या'नी लूत عليه السلام को) और उनके अह्ले ख़ाना को नजात दे दी सिवाए उनकी बीवी के, वोह अज़ाब में पड़े रेहनेवालों में से थी।

وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع ١٠ ١٢

84. और हमने उन पर(पथ्थरों की) बारिश कर दी सो आप देखिए कि मुजरिमों का अंजाम कैसा हुवा।

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ وَ لَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِى
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚ

85. और मदयन की तरफ़ (हमने) उनके(क़ौमी) भाई शुऐब (عليه السلام) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाहकी इबादत किया करो, इसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से रौशन दलील आ चुकी है सो तुम माप और तोल पूरे किया करो और लोगों को उनकी चीजें घटा कर न दिया करो और ज़मीनमें उस (के माहौले हयात) की इस्लाह के बाद फ़साद बपा न किया करो, येह तुम्हारे हक़में बेहतर है अगर तुम (उस उलूही पैग़ाम को) माननेवाले हो।

وَ لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ
تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ
اذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪
وَ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और तुम हर रास्ते पर इस लिए न बैठा करो कि तुम हर उस शख़्सको जो उस (दा'वत) पर ईमान ले आया है ख़ौफ़ ज़दह करो और (उसे) अल्लाहकी राहसे रोको और उस (दा'वत) में कजी तलाश करो (ताकि उसे दीने हक़्क़ से बरगश्ता और मुतनफ़्फ़िर कर सको) और (अल्लाह का एहसान) याद करो जब तुम थोड़े थे तो उसने तुम्हें कसरत बख़्शी और देखो फ़साद फैलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

وَ اِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا
بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ طَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ
بَيْنَنَا ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. और अगर तुम में से कोई एक गिरोह उस (दीन) पर जिसके साथ मैं भेजा गया हूं ईमान ले आया है और दूसरा गिरोह ईमान नहीं लाया तो (ऐ ईमान वालो!) सब्र करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे और वोह सबसे बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।